भाषा । साहित्य । संस्कृति

प्रश्नचिह्न

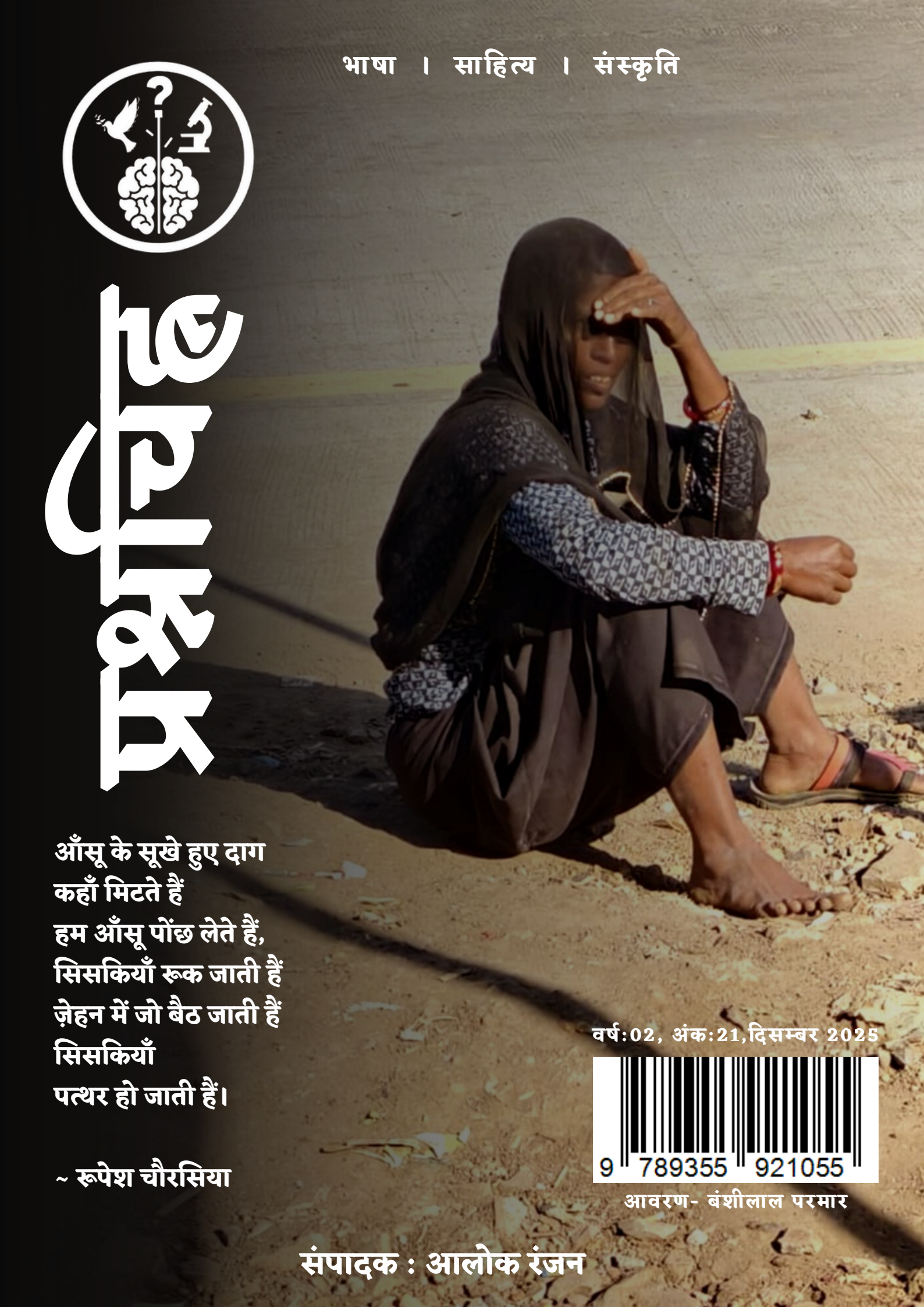

आँसू के सूखे हुए दाग
कहाँ मिटते हैं
हम आँसू पोंछ लेते हैं,
सिसकियाँ रूक जाती हैं
ज़ेहन में जो बैठ जाती हैं
सिसकियाँ
पत्थर हो जाती हैं।

~ रूपेश चौरसिया

वर्ष:02, अंक:21,दिसम्बर 2025

9 789355 921055

आवरण- बंशीलाल परमार

संपादक : आलोक रंजन

भाषा । साहित्य । संस्कृति

प्रश्नचिह्न

दिसम्बर 2025 । इक्कीसवाँ अंक

प्रबंध सम्पादक:
राहुल राज

प्रबंध सहयोग:
सौरव कुमार भारती

सम्पादक
आलोक रंजन

आवरण: बंशीलाल परमार
रेखांकन: श्वेता कुमारी

अक्षर संयोजन
खुशी

प्रश्नचिह्न में प्रकाशित रचनाओं का सर्वाधिकार रचनाकारों के अधीन सुरक्षित है। प्रश्नचिह्न में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार, तथ्य लेखकों के अपने हैं। प्रश्नचिह्न में प्रकाशित रचनाओं के लिए प्रश्नचिह्न पत्रिका समूह का सहमत होना आवश्यक नहीं है और न ही पत्रिका इसके लिए उत्तरदायी है।

वार्षिक मूल्य :

व्यक्तियों के लिए-	600.00 रुपये
संस्थाओं और पुस्तकालयों के लिए-	1500.00 रुपये
विदेशों में-	$25

एक प्रति का मूल्य :

व्यक्तियों के लिए-	50.00 रुपये
संस्थाओं के लिए-	100.00 रुपये
विदेशों में-	$10

विज्ञापन दरें :

बाहरी कवर-	20,000.00 रुपये
अन्दर कवर-	15,000.00 रुपये
अन्दर पूरा पृष्ठ-	10,000.00 रुपये
अन्दर का आधा पृष्ठ-	7,000.00 रुपये

संपादकीय कार्यालयः

8/54 - ए, प्रथम तल, डबल स्टोरी,
विजय नगर, दिल्ली - 110009
मोबाइल : 9155113056

ई-मेल: prashanchinha.patrika@gmail.com
infoprashanchinha.patrika@gmail.com

वेबसाईट: https://prashanchinhapatrika.blogspot.com

फेसबुक: https://www.facebook.com/prasnacihnapatrika

इंस्टाग्राम: https://www.instagram.com/prashanchinha.patrika

आवरण : बंशीलाल परमार - +91 99264 94975

अनुक्रम

सम्पादकीय

कविताएँ

रूपेश चौरसिया, बाल कृष्ण मिश्रा, सिमरिता चौहान

यश पाठक, शिवम ओझा

कहानियाँ

गणपत सिंह भदौरिया

डॉ पीतांबरी

व्यंग्य

डॉ. मुकेश 'असीमित'

समीक्षा

दिनेश कुमार माली

विविध

साहित्यिक समाचार

वर्षांत और समाज के अधूरे प्रश्न

संपादकीय

दिसम्बर केवल वर्ष का अंतिम महीना नहीं होता, यह ठहरकर देखने का समय भी होता है। यह वह क्षण है जब कैलेंडर के पन्ने बदलने से पहले समाज, व्यवस्था और व्यक्ति तीनों को आत्ममूल्यांकन की ज़रूरत पड़ती है। साल भर की घटनाएँ, संघर्ष, उपलब्धियाँ और असफलताएँ इस महीने में एक साथ हमारे सामने खड़ी दिखाई देती हैं। यही कारण है कि दिसम्बर का हर अंक अपने आप में विशेष हो जाता है। इस अंक का आवरण किसी एक व्यक्ति की कहानी नहीं कहता, बल्कि एक व्यापक सामाजिक सच्चाई को सामने रखता है। यह उस वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है जिसकी उपस्थिति हमारी सड़कों, फुटपाथों और शहरों में तो है, लेकिन हमारी नीतियों, चर्चाओं और प्राथमिकताओं में नहीं। यह तस्वीर उन लोगों की स्थिति को दर्शाती है जिनका जीवन लगातार संघर्ष में बीतता है, पर जिनकी आवाज़ अक्सर अनसुनी रह जाती है।

हम ऐसे दौर में रह रहे हैं जहाँ संवेदनाएँ धीरे-धीरे हाशिये पर जा रही हैं। तेज़ होती ज़िंदगी, डिजिटल संवाद और उपभोग की संस्कृति ने हमें इतना व्यस्त कर दिया है कि हम अपने आसपास की वास्तविकताओं से कटते जा रहे हैं। आँकड़े, रिपोर्ट और समाचार तो मौजूद हैं, लेकिन उनके पीछे छिपे मानवीय अनुभवों को समझने की इच्छा कम होती जा रही है। यही दूरी समाज को भीतर से खोखला करती है। प्रश्नचिह्न का यह दिसम्बर अंक इसी दूरी को पाटने का प्रयास है। भाषा, साहित्य और संस्कृति केवल मनोरंजन या बौद्धिक अभ्यास तक सीमित नहीं हैं। वे समाज का दर्पण हैं, ऐसा दर्पण जिसमें हमें वह भी दिखता है जिसे हम अक्सर देखना नहीं चाहते। इस अंक में प्रकाशित सामग्री का चयन इसी दृष्टि से किया गया है कि वह पाठकों को सोचने के लिए मजबूर करे, सवाल उठाए और संवाद की ज़मीन तैयार करे।दिसम्बर का महीना ठंड के साथ-साथ ठहराव भी लेकर आता है। यह ठहराव हमें यह सोचने का अवसर देता है कि वर्ष भर हमने किन मुद्दों पर ध्यान दिया और किन्हें नज़रअंदाज़ किया। क्या हमने केवल अपने निजी लक्ष्यों पर ध्यान केंद्रित किया, या समाज के उन हिस्सों को भी देखा जो लगातार उपेक्षा का शिकार हैं? यह सवाल असहज हो सकते हैं, लेकिन ज़रूरी हैं।